

4. मनुष्यता

-मैथिलीशरण गुप्त

(1)

विचार लो कि मर्त्य हो ना मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सु-मृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।

वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

क्षुधार्त रति देव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थि जाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।

अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे ?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही,
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्ध वाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोक वर्ग क्या न सामने झुका रहा ?

अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे

‘मनुष्य-मात्र बंधु है’ यही बड़ा विवेक हैं,
पुराण पुरुष स्वयं भूषिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्या भेद हैं,
परन्तु अन्तरैक्य में प्रमाणाभूत वेद हैं।

अनर्थ है कि बंधु हीन बंधु ही व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़े उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ! बढ़े ने भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

* अभ्यास *

1. कवि ने मनुष्य का भाव किस प्रकार व्यक्त किया है ?
2. धन का गर्व क्यों नहीं करना चाहिए ?
3. कवि ने मनुष्य मात्र को बन्धु क्यों माना है ?

